सादर प्रकाशनार्थ

नई दिल्ली, 19.8.2010

## प्राचीन भारतीय विज्ञान एवं गणित की उपलब्धियों को विश्व में प्रसारित करने की आवश्यकता

–डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने आज यहां विद्वान जैन संत प्रो0 मुनिश्री महेन्द्र कुमारजी से एक भेटवार्ता में कहा कि भारत में बहुत प्राचीन काल से विज्ञान एवं गणित के क्षेत्र में जो कार्य किया गया था वह बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। किन्तु दुखः की बात है कि उन उपलब्धियों को एक प्रकार से गोपनीय रखा गया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि इन महत्वपूर्ण अवधारणाओं का विश्वव्यापी प्रचार–प्रसार किया जाए। डा. कलाम ने प्रो. मुनि महेन्द्र कुमार द्वारा लिखित उन अनेक पुस्तकों का अवलोकन किया जिनमें आधुनिक विज्ञान के साथ प्राचीन जैन दर्शन में प्राप्त गणित एवं वैज्ञानिक अवधारणाओं का तुलानात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

डा. कलाम ने उन पुस्तकों का भी अवलोकन किया जिनमें प्रेक्षा–ध्यान एवं जीवन–विज्ञान के वैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर यह सिद्व किया है कि प्रेक्षा–ध्यान के प्रयोगों का मनुष्य के भावों एवं व्यवहारों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस सन्दर्भ में टिप्पणी करते हुए डा. कलाम ने कहा एडोल्स 'हक्सले' जैसे आधुनिक चिन्तकों ने '' मेन द अन्नोन '' जैसे ग्रंथों में अब यह भलीभंति स्वीकार कर लिया है मनुष्य की चेतना के रहस्यों का उद्धारन करने पर पता चल रहा है कि प्राचीन भारतीय मनीषा द्वारा निरूपित सिद्वान्त सचमुच बहुत ही मूल्यवान हैं।

डा. कलाम ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ के स्वर्गवास पर सरदारशहर जाकर उन्हें अपनी श्रद्धांजली अर्पित की थी, उस सन्दर्भ में मुनिश्री ने कहा कि यह आपके मनमें आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के प्रति जो गहरी श्रद्धा है उसका परिचायक है। मुनिश्री ने तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में चल रहे मानवीय मूल्यों के विभिन्न कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला तथा सन 2014 में मनाई जाने वाली आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी की परियोजनाओं से उन्हें अवगत कराया। इसमें विशेष रूप से ''विज्डम वर्ल्ड '' संबंधी योजना पर विस्तृत चर्चा की।

डा. कलाम ने प्रो. मुनिश्री महेन्द्र कुमार जी द्वारा सघः लिखित पुस्तक '' द एनिग्मा आफ द यूनिवर्स '' का सितम्बर के तीसरे सप्ताह में दिल्ली में विमोचन करने की स्वीकृति प्रदान की।

बातचीत के दौरान युवा संत मुनिश्री अभिजीत कुमार जी ने डा. कलाम को बताया कि जैन की वैज्ञानिक अवधारणाओं का सम्यक् प्रचार–प्रसार करने के लिए हमें विश्वभर में चल रहे शोध कार्यों एवं उनसे जुड़े विद्वानों से बराबर सर्म्पक रखना होगा। इस दृष्टि से आप एक संयोजक कड़ी की भूमिका निभा सकते हैं। डा. कलाम ने इसके प्रत्युतर में कहा कि मैं अवश्य इसके लिए उन लोंगों और आपके बीच में सम्वाद स्थापित करवाने में सहयोगी बनूंगा।

घण्टेभर चली भेंटवार्ता में तपस्वी मुनि अजित कुमारजी, अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री टी. के. जैन तथा दक्षिण दिल्ली तेरापंथ सभा के संगठन मंत्री श्री हीरालाल गेलड़ा ने भी भाग लिया।